P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

19वीं सदी में हिन्दी साहित्य के विकास में साहित्यिक पत्रिकाओं की भूमिका
विशेष सन्दर्भ :– हेतु भारद्वाज

अशोक धवन
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
सम्राट पृथ्वीराज चौहान
राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान, भारत

सारांश

मानव की सामाजिक चेतना का प्रसार साहित्य के विविध रूपों में दिखाई देता है। पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से एक ओर सामाजिक चेतना में जागृति आती हैं तो दूसरी ओर साहित्य का अभिवर्धन होता है। किसी भी भाषा एवं लोक–चेतना के विकास में पत्र–पत्रिकाओं का महत्व सर्वविदित है। इस तरह पत्र–पत्रिकाएँ किसी भी भाषा तथा उसके साहित्य के अस्तित्व का प्रतीक और उसकी अस्मिता की परिचायक होती हैं। वर्तमान काल में दैनिक समाचार–पत्रों तथा अन्य पत्रिकाओं का जो स्वरूप दिखाई देता है, इसका मूल भी सामाजिक चेतना को ही माना जाता है, लेकिन इसका सर्जक साहित्यकार ही होता है। पत्र–पत्रिका के माध्यम से साहित्यकार की रचना का प्रकाशन होता है, उसकी चेतना समाज के सामने प्रकट होती है और उसके माध्यम से उसका अर्थात् साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रकाशन एवं प्रचार भी होता है। इस प्रकार पत्रकारिता का क्षेत्र भिन्न होते हुए भी वह एक अच्छे साहित्यकार के कर्त्तव्य का निर्वाह करता है।

मुख्य शब्द : पत्र, पत्रकारिता, साहित्य।

प्रस्तावना

आज से लगभग तीन शताब्दी पूर्व लोगों को समाचार–पत्रों तथा पत्रिकाओं के विषय में कोई ज्ञान नहीं था। केवल कर्ण–परम्परा के माध्यम से ही समाचार एक–दूसरे तक पहुँचते थे। समाचार–पत्रों का प्रथम उद्भव स्थान 'इटली' माना जाता है। इटली के वेनिस नगर में सोलहवीं शताब्दी में इसका समारम्भ हुआ। सत्रहवीं शताब्दी में इंग्लैण्ड में भी इसका प्रचार हुआ। भारतवर्ष में आकर अंग्रेजों ने अपनी नीतियों तथा ईसाई धर्म का प्रचार–प्रसार करने के लिए 'समाचार दर्पण' नामक पत्र निकाला उससे प्रभावित होकर और उन्हें मुँहतोड़ उत्तर देने के लिए राजा राममोहन राय ने 'कौमुदी' नामक पत्र का प्रकाशन किया। इसी प्रकार अन्य पत्र–पत्रिकाओं का भी क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशन हुआ। परन्तु विशुद्ध रूप से हिन्दी में समाचार–पत्र का समारम्भ 'उदन्त मार्त्तण्ड' से माना जाता है।

बाबू राधाकृष्णदास ने सर्वप्रथम 'हिन्दी के सामाजिक पत्रों का इतिहास' नामक पुस्तक में हिन्दी की पत्र–पत्रिकाओं का इतिहास प्रस्तुत करने का प्रयास किया। उनके पश्चात् बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने' गुप्त निबन्धावली' नाम से इस विषय पर और अधिक प्रकाश डाला।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य हिंदी साहित्य में साहित्यिक पत्रिकाओं की विशेष भूमिका का अध्ययन करना है।

हिन्दी पत्रकारिता का विकास

हिन्दी में पत्रकारिता का विकास समय–समय पर अनेक स्थानों से प्रकाशित विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से समझा जा सकता है। समीक्षकों ने हिन्दी पत्रकारिता के विकास के निम्न पाँच चरण माने हैं –

1. प्रथम चरण (पूर्व भारतेन्दु युग, सन् 1826 से 1867 तक)
2. द्वितीय चरण (भारतेन्दु युग, सन् 1868 से 1902 तक)
3. तृतीय चरण (द्विवेदी युग, सन् 1903 से 1920 तक)
4. चतुर्थ चरण (स्वातन्त्रय युग, 1921 से 1947 तक)
5. पंचम चरण (स्वातन्त्रयोत्तर युग, सन् 1948 से अब तक)

मानव के मनोंभावों, समाज को वाणी तथा जनचारण की भूमिका निभाने हेतु ही साहित्य को समाज का प्रतिबिम्ब कहा जाता है, आजादी पूर्व की

पत्रकारिता भी इसी हेतु कटिबद्ध थी, पत्रकार भारतेन्दु देश की उन्नति तथा उत्थान हेतु हिन्दी की उन्नति आवश्यक मानते थे।

''निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल''

पं. प्रताप नारायण मिश्र ने तो स्पष्ट शब्दों में कहा था कि 'हिन्दी का पूर्ण प्रचार हुए बिना हिन्दुस्तान का उद्धार असंभव है।' हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता का आरम्भ हुआ था इसी कारण इन्हें (भारतेन्दु) हिन्दी पत्रकारिता का पिता या जनक भी कहा जाता है। स्वयं भारतेन्दु ने 'कविवचन सुधा' तथा 'हरिश्चन्द्र मैंगजीन'' का सूत्रपात तथा सम्पादन किया तथा साथ ही उनकी प्रेरणा से ही अनेक पत्रिकाओं का प्रारम्भ हुआ। जिनमें मुख्य :–

हिन्दी प्रदीप	(बालकृष्ण भट्ट)
ब्रह्मण	(प्रताप नारायण मिश्र)
आनन्द कादम्बिनी	(बदरी नारायण चौधरी प्रेमधन)
तत्वबोधिनी	(भारतेन्दु हरिश्चन्द्र)

कालान्तर में द्विवेदी युग का समय हिन्दी के जागरण–सुधार का रहा जिसमें महावीर जी तथा उनकी पत्रिका 'सरस्वती' भाषासुधार, परिमार्जन हेतु प्रसिद्ध रही, इसी पत्रिका कारण हम मैथिलीशरण गुप्त तथा हरिऔंध का हिन्दी साहित्य में उच्च स्थान देखते है। महावीर जी के उपरान्त मैथिलीशरण गुप्त, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, पन्त, प्रेमचन्द, रूपनारायण पाण्ड़ेय, गणेश शंकर विद्यार्थी विशेष प्रसिद्ध रहें विशाल भारत, कर्मयोगी, प्रताप, रूपाभ, चाँद, इन्दु, प्रभा, स्वराज्य, सैनिक, स्वदेश इस युग की अतिमहत्वपूर्ण पत्रिकाऐं रहीं है।

आजादी के उपरान्त पत्रकारिता के अनेक वर्ग बन गए जैसे :–

1. दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक
2. शोधपरक, शिक्षा, नैतिक, अर्थशास्त्र, दर्शन, राजनीति
3. पत्रकारिता में विशेष विषय :–
   - शिक्षा
   - नैतिकता
   - कानून
   - समसामयिक
   - स्तम्भलेखन
   - सामाजिक मुद्दे इत्यादि

इसी सन्दर्भ में हम राजस्थान के विशेष सन्दर्भ से हेतु भारद्वाज की बात करे तो 1960 के दशक से वर्तमान तक इन्होंने एक ईमानदार पत्रकार का कर्त्तव्य निभाते हुए साहित्यिक पत्रकारिता को जीवन्त ही नही रखा वरन् पालन–पोषण भी किया।

निष्कर्ष

कहा जाता है कि अच्छी पत्रकारिता अच्छा साहित्य है, उसी तरह से यह भी कहा जाता है कि अच्छा साहित्य पत्रकारिता की भूमिका निभाता हैं अथवा यों कहें कि दोनों का लक्ष्य एक ही है। पत्रकारिता तथा साहित्य जिम्मेदार नागरिक तथा राष्ट्र को राष्ट्र बनाने का कार्य करते हैं, सामाजिक विकास और आधुनिकीकरण के सन्दर्भ में यदि इन पर विचार किया जाऐं तो इस क्षेंत्र में विविधमुखी नवीन संभावनाओं को तलाशा जा सकता हैं, नये मूल्यों को समाज से तथा समाज को, जनमानस को आधुनिकीकरण से आसानी से जोड़ा जा सकता हैं। जनसंचार के इस मुख्य साधन से नए जीवन का एक आकर्षक विकल्प प्रस्तुत कर उन्हें जड़ता का मार्ग छोड़कर सक्रियता की राह अपनाने की प्रेरणा के संग, मनोरंजन के साथ बड़े मार्मिक ढंग से सदुपयोग भी दिये जा सकते है। ये सभी स्वर हम हेतु भारद्वाज की निम्न पत्रिकाओं मे भी देख सकते है :–

1. अक्सर
2. पंचशील शोध पत्रिका
3. मधुमती
4. आज की कविता
5. तटस्थ
6. समय माजरा

हेतु जी ने अपनी पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी साहित्य तथा हिन्दी पत्रकारिता हेतु निम्न महत्वपूर्ण सहरानीय कार्य किये :–

1. हिन्दी साहित्य में नवीन विषयों को जीवन्त करना।
2. हिन्दी साहित्यकारों के अनछुऐं पहलुओं को जनमानस समक्ष रखना।
3. साहित्यकारों के जीवन का साधारणीकरण करना।
4. दलित–शोषितों की पीड़ा को वाणी देना।
5. आधुनिककालीन नारी जीवन को तराशना
6. प्रगतिवादी दृष्टिकोण की स्थापना करना।
7. राष्ट्रीय अस्मिता की खोज
8. सामाजिक सरोकरों का निर्वहन
9. कथा, निबन्ध, आलोचना, साक्षात्कार, पत्र विधा पर ध्यान देना।
10. समसामयिक मुद्दों पर बेबाक राय देना।
11. अनुसंधानकर्त्ताओं को नवीनतम सामग्री प्रदान करवाना।
12. छोटे–छोटे विषयों पर लेखन
13. सांस्कृतिक तथा धरोहर का संरक्षण करना।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

आज की कविता :– हेतु भारद्वाज
तटस्थ (त्रैमासिक) :– हेतु भारद्वाज
मधुमती (मासिक) :– हेतु भारद्वाज
आधुनिक पत्रकारिता (डॉ. अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)
पत्रकारिता के विविध परिदृश्य (डॉ. संजीव भानावत रचना प्रकाशन, जयपुर)
हिन्दी पत्रकारिता :– विकास और विविध आयाम (डॉ. सुशीला जोशी राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।)